

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)



जय किसान
जय कृषि विज्ञान

डॉ. भाष्कर दुबे

मुख्य संपादक

editorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी

संपादक

editor@naso.org.in

सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त

सह-संपादक

coeditor@naso.org.in

टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह

सह-संपादक

coeditor@naso.org.in

टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी,

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

मल्टीलेयर फार्मिंग

डॉ ललित सनोदिया

सहायक प्रोफेसर- पीआरएसयू, प्रयागराज (यूपी)

परिचय:

मल्टीलेयर फार्मिंग (Multilayer Farming) आधुनिक कृषि की एक ऐसी तकनीक है जिसमें एक ही भूमि क्षेत्र पर एक साथ कई प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं, जो ऊँचाई में अलग-अलग स्तरों पर होती हैं। इस पद्धति में किसान भूमि के अधिकतम उपयोग के साथ-साथ विविधता और आय में वृद्धि प्राप्त करता है। यह पद्धति विशेष रूप से उन क्षेत्रों में उपयोगी है जहाँ भूमि सीमित है।

मल्टीलेयर फार्मिंग की संरचना:

मल्टीलेयर फार्मिंग में आमतौर पर चार स्तर होते हैं:

ऊपरी स्तर (Top Layer):

इस स्तर पर ऊँचाई पर उगने वाले वृक्ष जैसे – आम, नारियल, कटहल, सहजन आदि उगाए जाते हैं।

दूसरा स्तर (Second Layer):

इसमें छायादार पौधे जैसे – केला, पपीता, अमरूद आदि शामिल होते हैं।

तीसरा स्तर (Third Layer):

इस स्तर पर मध्यम ऊँचाई की फसलें जैसे – टमाटर, मिर्च, अदरक, हल्दी, शिमला मिर्च आदि उगाई जाती हैं।

निचला स्तर (Bottom Layer):

यहाँ ज़मीन के पास उगने वाली फसलें जैसे – पालक, धनिया, मैथी, पुदीना, मूली आदि होती हैं।

लाभ (फायदे):

भूमि का अधिकतम उपयोग:

एक ही क्षेत्र में अनेक फसलों की खेती से भूमि की उपयोगिता बढ़ती है।

जल संरक्षण:

ऊपरी स्तर के पौधे निचली फसलों को सूर्य की तेज़ धूप से बचाते हैं, जिससे वाष्पीकरण कम होता है और पानी की बचत होती है।

कीट एवं रोग नियंत्रण:

विविधता के कारण कीट व रोगों का प्रभाव कम होता है, जिससे कीटनाशकों की आवश्यकता घटती है।

आय में वृद्धि:

किसान को एक समय में कई फसलों से आय होती है, जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार:

विविध प्रकार की फसलों से मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है।

चुनौतियाँ:

मल्टीलेयर फार्मिंग की योजना बनाना और उसका प्रबंधन करना थोड़ा जटिल होता है।

इसकी प्रारंभिक लागत सामान्य खेती की तुलना में अधिक हो सकती है।

फसल चयन में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है ताकि सभी फसलें एक-दूसरे के विकास में बाधक न बनें।

निष्कर्ष:

मल्टीलेयर फार्मिंग एक टिकाऊ, लाभकारी और पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त कृषि प्रणाली है। यह तकनीक भूमि, जल और श्रम की सीमाओं के बावजूद किसानों को अधिक उत्पादन और आय प्रदान करने की क्षमता रखती है। यदि इसे सही प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के साथ अपनाया जाए, तो यह भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि क्रांति का आधार बन सकती है।